उम्मीद फिर से जगी
(23:11-35)

उम्मीद छोड़ देना एक दुखद बात है। मैं ऐसे लोगों के साथ रहा हूं जिनकी यह उम्मीद जाती रही कि उनका स्वास्थ्य फिर से सुधरेगा, उनका कोई प्रिय फिर से मिल जाएगा या जीवन साथी लौट आएगा।[1] मैंने उनके कन्धे झुके हुए, उनके चेहरे धंसे हुए और उनकी आंखें पथराई हुई देखी हैं। जब जीवित रहने के लिए हमारे पास केवल उम्मीद ही हो, तो यह निष्कर्ष निकालना सर्वनाशी है कि ''... क्या है कि मैं आशा रखूं'' (अय्यूब 6:11)।

एक समय, पौलुस ने रोम जाने की उम्मीद की थी (प्रेरितों 19:21; रोमियों 15:22-29), परन्तु वह उम्मीद धूमिल हो चुकी थी। यरूशलेम में पहुंचने के कुछ दिन बाद ही उस पर आक्रमण करके उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। अब वह कैद में था, और यहूदी उसकी मृत्यु के षड्यन्त्र रचते जा रहे थे। यह निराशा की स्थिति के जैसा ही था क्योंकि यदि वह कैद में रहता, तो उसकी कोई सेवकाई नहीं होनी थी और यदि वह छूट जाता, तो निश्चय ही उसे मार दिया जाता। रोम पहुंचने की उसकी उम्मीद टिमटिमा रही थी, पर अभी मरी नहीं थी।

यह पाठ पौलुस की उम्मीद के पुनर्जन्म के बारे में है और बताता है कि आपकी और मेरी मुरझाई हुई आशाओं में कैसे प्राण फूंके जा सकते हैं।[2]

परमेश्वर का वायदा (23:11)

प्रेरितों 23:10 में पौलुस महासभा की पकड़ से छूट गया था: ''जब बहुत झगड़ा हुआ, तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें पलटन को आज्ञा दी, कि उतरकर उसको उनके बीच में से बरबस निकालो, और गढ़ में ले जाओ।''

यह पाठ जेल की कोठरी में पौलुस के एकान्त से आरम्भ होता है। अंधेरा था, परन्तु वह सो नहीं सका था। जी. कैम्पबेल मॉर्गन ने उस रात को ''पौलुस के इतिहास में ... सबसे काली रात'' कहा।[3] सभा कक्षों में प्रेरित की पिटाई ने भीड़ द्वारा की गई उसकी पिटाई से हुए घावों को छेड़ दिया था, और उसे ताज़ा दर्द और पीड़ा दे दी थी। परन्तु, सबसे बड़ी पीड़ा उसके मन में थी।[4]

लूका ने हमें पौलुस की मानसिक स्थिति के बारे में नहीं बताया, परन्तु उसको अपने मन में उतारना कठिन नहीं है।[5] वह अवश्य ही *निराश* हो चुका होगा; मसीहियों के बीच

सम्बन्ध सुधारने के लिए बनाई हुई उसकी योजनाएं स्पष्टत: समाप्त हो चुकी थीं। यकीनन ही वह *हताश* था; उसे उम्मीद थी कि साथी यहूदी उसकी सुनेंगे, परन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। उसे *संदेही* होना था; ऐसा लगता था जैसे रोम जाने का कोई मार्ग ही न हो। उसकी उम्मीद मुरझा गई थी।

परन्तु, प्रभु, महान उम्मीद जगाने वाला है। दमिश्क के मार्ग में दर्शन देकर, उसने पौलुस से वायदा किया था कि वह उसे दर्शन देता रहेगा (26:16)। कम से कम दो बार पहले, जब पौलुस बिल्कुल हिम्मत हार बैठा था और संकट निकट था तब प्रभु ने अपना वायदा पूरा किया था (22:17-21; 18:9, 10)। अब प्रभु फिर उसके पास आया: ''उसी [महासभा के सामने पौलुस की पेशी वाली] रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर[6] कहा; हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी,[7] वैसी ही तुझे रोम में भी देनी होगी''[8] (23:11)।

प्रभु ने पौलुस की पीड़ा को महसूस किया (इब्रानियों 4:15) और उसके हर दर्द का ध्यान रखा। पौलुस इस बात से परेशान होकर निराश हो गया था कि परिस्थिति कैसी हो गई थी, सो यीशु उसके लिए *उत्साह* का संदेश लेकर आया और उससे कहा, ''ढाढ़स बान्ध।'' वारेन वियर्सबे ने इस प्रकार से कहा है:

> पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु अक्सर ये शब्द कहता था। उसने ये शब्द झोले के मारे आदमी से (मत्ती 9:2) और उस औरत से कहे जिसे लहू बहने का रोग था (मत्ती 9:22)। उसने तूफान में चेलों को पुकारा (मत्ती 14:27), और अटारी में उसने ये शब्द दोहराए (यूहन्ना 16:33)। परमेश्वर के लोग होने के नाते, हम हमेशा कठिन समयों में ढाढ़स बान्ध सकते हैं क्योंकि प्रभु हमारे संग है और हमारे साथ रहेगा।[9]

पौलुस निराश था क्योंकि उसे लगा था कि वह अपने साथी यहूदियों को मनाने में असफल हो गया है, इसलिए यीशु ने उसकी *सराहना* की: ''तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी।'' उसका काम किसी को बदलना नहीं बल्कि प्रचार करना था। उसने अपना काम किया और प्रभु ने उसके प्रयासों को मान लिया। केवल दिखाई देने वाली ''सफलता'' ही यह संकेत नहीं है कि हम प्रभु को भा रहे हैं। यदि हम आज्ञा का पालन विश्वास से करते हैं, तो प्रभु को प्रसन्न करते हैं।

पौलुस को भविष्य के बारे में संदेह था, सो यीशु ने उसका *साहस* बढ़ाया: ''... तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।''[10] पहली बार, पौलुस को पता चला कि वह रोम में पहुंच जाएगा। आत्मा ने उसे ज्ञात करवा दिया था कि यरूशलेम में ''बन्धन और क्लेश'' उसकी प्रतीक्षा में हैं (20:22, 23), परन्तु उसके आगे की बात आत्मा ने पौलुस को नहीं बताई थी। अब, जब लगा कि रोम में जाने का उसका मार्ग अवरुद्ध होने वाला है, तो प्रभु ने राजधानी नगर जाने वाला एक अन्य राजमार्ग सीधा खोल दिया।

प्रभु ने पौलुस से सांत्वना, स्वतन्त्रता या सफलता देने का वायदा नहीं किया। उसने केवल इतना वायदा किया कि पौलुस रोम में पहुंचेगा और प्रेरित को यही चाहिए था। दर्शन हुए कई दिन गुज़र जाने पर, पौलुस का शरीर दुख रहा था और वह अभी भी जेल की दीवारों में बन्द था। उसे अभी भी कुछ पता नहीं था कि वह रोम में कैसे पहुंचेगा, परन्तु इन सब बातों की उसे कोई परवाह नहीं थी। अब उसे प्रभु का वायदा मिल गया था! उसने पौलुस की अपेक्षाओं की बुझ रही चिंगारियों को हवा दे दी थी अर्थात उसके सीने में एक बार फिर उम्मीद की लपटें ऊपर तक उठने लगीं।

जब रात बहुत अन्धेरी हो और उम्मीद लगभग जाती रहे, तो भी प्रभु हमारी उम्मीद को फिर से प्रज्वलित कर सकता है। नहीं, प्रभु कोई वायदा लेकर दर्शन में हमारे पास आकर नहीं कहेगा कि हमारा हर सपना पूरा हो जाएगा। परन्तु, हमें उत्साह, सराहना और साहस का संदेश उसी से मिलता है। उत्साह का उसका संदेश है ''यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; ...'' (भजन संहिता 27:14)। सराहना के उसके शब्द हैं ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (मत्ती 25:21)। साहस का उसका संदेश है ''और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है'' (1 यूहन्ना 5:14)। हो सकता है कि हमारे जीवन में सब कुछ ठीक न हो परन्तु यह तो ठीक है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हमें सम्भालता है और वह ऐसा प्रबन्ध करता है कि हमारे जीवन में ''सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)!

हमारी कहानी अभी समाप्त नहीं हुई। प्रभु के वायदे के थोड़ी ही देर बाद बड़ी ज़बरदस्त परीक्षा हुई।

परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध (23:12-35)

षड्यन्त्र रचा गया (आयतें 12-15)

जैसे प्रभु ने पौलुस को उसके भविष्य के बारे में बताया था, उसके शत्रु बिल्कुल वैसे ही विचार कर रहे थे कि वे उसे उसका भविष्य बनाने से कैसे रोक सकते हैं। इस बात से घबराकर कि वह अन्यजातियों के आंगन से और फिर सभा के कक्षों में उनके हाथों से निकल गया था, उन्होंने एक बड़ी आसान योजना बनाई। ''जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एका किया, और शपथ ली कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें,[11] तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार। जिन्होंने आपस में यह शपथ खाई थी, वे चालीस जनों के ऊपर थे'' (आयतें 12, 13)। उनकी शपथ कुछ ऐसी होगी: ''यदि हम पौलुस को मार देने से पहले कुछ खाएं या पीएं, तो प्रभु हमसे वैसा ही बल्कि उससे भी बढ़कर करे।'' ऐसे खूनी उद्देश्य में परमेश्वर के नाम को जोड़ने से क्या हम स्तब्ध नहीं रह जाते? यीशु ने अपने अनुयायियों से वायदा किया था कि ''वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार

डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं'' (यूहन्ना 16:2)।

शपथ लेने वाले ये चालीस यहूदी कौन थे? क्या वे यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी थे जिन्होंने दो दशक पूर्व पौलुस की हत्या करने का यत्न किया था (9:29)? क्या वे एशियाई यहूदी थे जिन्होंने दंगा भड़काया था (21:27)? क्या वे उन सदूकियों में से थे जिन्हें सभा में पौलुस ने क्रोध दिलाया था (23:6-9) या कहीं सहानुभूति रखने वाले सदूकी तो नहीं थे? शायद उनके साथ कई अन्य लोग भी शामिल थे, क्योंकि यहूदियों में पौलुस के बहुत से शत्रु थे।

उनके षड्यन्त्र के लिए महासभा के अगुओं का सहयोग जरूरी था, परन्तु हत्या की अपनी योजना के बारे में महायाजक और उसके मित्रों[12] की रक्तरंजित ख्याति को ध्यान में रखकर वे उनके पास जाने से नहीं झिझके:

> उन्होंने महायाजकों[13] और पुरनियों के पास आकर कहा, हम ने यह ठाना है; कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ चखें भी, तो हम पर धिक्कार पर धिक्कार है। इसलिए अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास ले आये, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक जांच करना चाहते हो,[14] और हम उस के पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिए तैयार रहेंगे (आयतें 14, 15)।[15]

षड्यन्त्र बड़ा सरल था। सभा के एक प्रतिनिधि ने पिछले दिनों हुई गड़बड़ी के लिए रोमी कमांडर से खेद प्रकट करना था और यह आश्वासन देते हुए कि ऐसी हलचल दोबारा नहीं होगी, एक और अवसर मांगना था। वह अधिकारी अभी भी पौलुस पर लगे आरोप के बारे में उलझन में था, इसलिए उसने सच्चाई को जानने के लिए सम्भवत: एक और अवसर दे देना था। चालीस षड्यन्त्रकारियों ने अपने चोगों में तेज धार कटारें छुपाकर भीड़ में मिल जाना था। जब पौलुस को सिपाहियों की छोटी सी टुकड़ी अन्यजातियों के आंगन में से धकेलते हुए ले जाती,[16] तो हत्यारों ने चमकते हुए चाकुओं से उस पर प्रहार करने के लिए टूट पड़ना था। कुछ ही पलों में पौलुस का लहू फर्श पर फैले अपने रक्षकों और हत्यारों के लहू से मिल जाना था।[17] जब सभा के सामने इस कार्य की घोषणा हो जाती, तो महायाजक अपना सिर हिलाता, अपने भय की घोषणा करता कि ऐसी बात मन्दिर के आंगन में हुई है और सभा को भंग कर देता। यह एक ऐसी चाल थी जिसमें उन्होंने निश्चय ही सफल होना था।

बुद्धिमान ने ऐलान किया था: ''यहोवा के विरुद्ध... न कोई [मनुष्य की] युक्ति चलती है'' (नीतिवचन 21:30)। और यीशु ने पौलुस को आश्वासन दिया कि वह रोम में पहुंचेगा। फिर, वह षड्यन्त्र कैसे टल सकता था? क्या प्रभु ने पौलुस के बचाव के लिए किसी चमत्कार का प्रबन्ध किया था? परमेश्वर ने अपने आपको जेल तोड़ने के चमत्कार में दक्ष साबित कर दिया था (प्रेरितों 5:19; 12:7; 16:26)। प्रेरितों 23 में प्रभु ने यह प्रबन्ध नहीं करना था। बल्कि, पौलुस ने परमेश्वर के *पूर्वप्रबन्ध* के द्वारा सुरक्षित रहना था।

निरपवाद रूप से परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध की बाइबल की शिक्षा का अध्ययन हमारी

उम्मीद को बढ़ाएगा। जी. सी. ब्रिवर[18] से एक बार पूछा गया, ''क्या आप परमेश्वर के विशेष पूर्वप्रबन्ध में विश्वास रखते हैं?'' उसने उत्तर दिया, ''वह हमें और कैसे सम्भालता है?''[19] ''पूर्वप्रबन्ध'' का अंग्रेज़ी शब्द ''providence'' केवल प्रेरितों 24:2 में अंग्रेज़ी की बाइबल[20] में एक ही बार मिलता है, जहां पर इसे परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध के लिए नहीं, बल्कि एक रोमी अधिकारी की दूरदृष्टि के लिए इस्तेमाल किया गया। अंग्रेज़ी शब्द ''providence'' लातीनी शब्द से निकला है और इसका अक्षरश: अर्थ है ''आगे देखना'' (अर्थात, पूर्व अनुमान लगाना), जबकि मिश्रित यूनानी शब्द के अनुवाद ''providence'' का भी लगभग यही अर्थ है: ''[समय से] पहले या आगे सोचना।'' अंग्रेज़ी, हिन्दी और यूनानी सभी शब्दों को समय से आगे के प्रबन्ध के लिए इस्तेमाल किया जाता है। निश्चय ही, मनुष्य ऐसा ही करते हैं। यह जानना कितना आश्वस्त करने वाला है कि परमेश्वर भी अपने लोगों के लिए ऐसा ही करता है!

पूर्वप्रबन्ध परमेश्वर के प्राकृतिक नियम को स्थगित करने (अर्थात, आश्चर्यकर्मों के द्वारा) के बजाय प्राकृतिक नियम द्वारा काम करना है। किसी ने परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध को ''इतिहास के दस्ताने में परमेश्वर का हाथ'' कहा है। पौलुस के यरूशलेम में अन्तिम बार जाने के अपने अध्ययन में, हम पहले ही बार-बार परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध को कार्य करता देख चुके हैं। क्या यह मात्र संयोग था कि जब पौलुस मन्दिर के आंगन में उत्तेजित भीड़ में घिरा था तो तुरन्त एक रोमी कमांडर वहां आ गया? क्या केवल ''भाग्य'' से पौलुस रोमी नागरिक होने के कारण अधमरा होने से बच गया? क्या यह ''यूं ही हो गया'' कि वह कमांडर एक विवेकी अधिकारी था जो पौलुस के रोमी नागरिक होने का सम्मान करता था? नहीं, बल्कि यह सब तो इसलिए हुआ क्योंकि नियन्त्रण हमारे परमेश्वर के हाथ में है!

जब हम यह कहते हैं कि आज परमेश्वर चमत्कारी ढंग से कार्य नहीं करता तो हम पर परमेश्वर को सीमित करने का आरोप लगाया जाता है। जिन लोगों का यह विश्वास है कि जब तक परमेश्वर चमत्कारी ढंग से काम नहीं करता तब तक वह काम कर ही नहीं सकता। ये वही लोग हैं जो परमेश्वर की शक्तियों को सीमित करते हैं। 12 से 35 आयतों तक परमेश्वर का उल्लेख एक बार भी नहीं हुआ, न ही कोई आश्चर्यकर्म हुआ; परन्तु इस सारे प्रकरण में परमेश्वर का हाथ स्पष्ट दिखाई देता है!

षड्यन्त्र का भंडाफोड़ होता है (आयत 16-22)

आयत 16 में हम कहानी को आगे बढ़ाते हैं: ''और पौलुस के भांजे ने सुना कि वे उस की घात में हैं'' (आयत 16क)। लूका के शब्द हमारी जिज्ञासा को कैसे बढ़ा देते हैं![21] यह भांजा कौन था?[22] वह यरूशलेम में क्यों आया था?[23] क्या वह मसीही था?[24] उसे उस प्रस्तावित घात का कैसे पता चला?[25] लूका के लिए इनमें से कोई भी बात महत्वपूर्ण नहीं थी। उसके लिए जो महत्वपूर्ण था वह यह था कि उस जवान को षड्यन्त्र का पता चला और वह यह समाचार देने के लिए सीधा पौलुस के पास आ गया। ''तो गढ़ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया'' (आयत 16ख)। (एक बार जब पौलुस ने रोमियों को बताया

था कि वह रोमी नागरिक है, तो स्पष्टत: उसे रियायत मिली थी जिसमें बाहर से आने वाले लोगों से मिलने की अनुमति की रियायत भी शामिल थी [ध्यान दें 24:23; 28:30]।[26])

स्वाभाविक ही है, पौलुस अपने भांजे की बात से चिन्तित हो गया था। हम पढ़ते हैं:

> पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा; इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता है। सो उसने उसको पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा; पौलुस बन्धुए ने मुझे बुलाकर बिनती की, कि यह जवान पलटन के सरदार से कुछ कहना चाहता है; उसे उसके पास ले जा। पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़कर, और अलग ले जाकर पूछा; मुझ से क्या कहना चाहता है? (आयतें 23:17-19)।

जवान की किसी बात या, शायद उसके चेहरे को देख वह रोमी अधिकारी तुरन्त समझ गया कि वह किसी घटना की जानकारी लेकर आया है। वह उसे एक ओर ले गया ताकि सभी न सुन सकें। पौलुस के भांजे के लिए प्रयुक्त हुए शब्द और इस तथ्य से कि कमांडर उसका हाथ पकड़कर एक ओर ले गया[27], बहुत से विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वह केवल लड़का ही नहीं था।[28] यदि वह थोड़ा बड़ा था तो उसने जेल में ऐसा खतरनाक संदेश लाने में सचमुच बहादुरी दिखाई।

इस जवान के रोमी अधिकारी को निर्देश देने की कल्पना करें:

> उसने कहा; यहूदियों ने एका किया है, कि तुझ से बिनती करें, कि कल पौलुस को महासभा में लाए, मानो तू और ठीक से जांच करना चाहता है। परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि उन में से चालीस से अधिक लोग उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान लिया है, कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं, पीएं तो हम पर धिक्कार; और उन्होंने पूरी तैयारी कर रखी है, केवल तेरे वचन की आस देख रहे हैं[29] (आयतें 20, 21)।

फिर, पौलुस के भांजे ने रोमी अधिकारी को किसी बात का विश्वास दिलाया। सम्भवत: उस पद पर वह इतनी देर से था कि उसे पता था कि यहूदी इस प्रकार के षड्यन्त्र रच सकते थे।[30] लड़के की बात सुनते ही यह कमांडर अपने विकल्पों पर विचार करने लगा,[31] एक विकल्प सभा की बिनती को मान लेना था। यदि वह ऐसा करता, तो उसका इस घृणित समस्या से पीछा छूट जाता, परन्तु उसके रिकॉर्ड में एक कैदी को छोड़ देने का धब्बा लग जाता,[32] इसके अलावा वह एक विवेकी आदमी भी था। पौलुस एक रोमी नागरिक था जिसकी सुरक्षा होनी चाहिए थी। एक विकल्प सभा की योजना से सहमत होने का बहाना करके भावी हत्यारों को मार देने के लिए सिपाही भेजना था। परन्तु, उससे दंगा भड़क

सकता था, अर्थात एक ऐसी विस्फोटक स्थिति पैदा हो सकती थी जिससे वह बचना चाहता था। एक ही व्यावहारिक विकल्प था कि जितनी जल्दी हो सके चुपके से उस कैदी को नगर से भगा दिया जाए।

अपने मन को तैयार करके, पलटन के सरदार ने जल्दी से सूचना देने वाले को, ''यह आज्ञा देकर विदा किया, कि किसी से न कहना कि तूने मुझ को ये बातें बताई हैं'' (आयत 22)। वह नहीं चाहता था कि सभा को कार्यवाही से पहले पता चले कि उसे उनके षड्यन्त्र का पता चल गया है वरना वे उसकी योजना को निष्फल करने की कोशिश कर सकते थे। न ही वह यह चाहता था कि उन्हें बाद में पता चले कि उसे उनकी योजनाओं का पता था, क्योंकि इससे विद्रोह उत्पन्न हो सकता था। उसकी कार्यवाही सैनिक तथा राजनीतिक नीति की तरह थी।

षड्यन्त्र विफल हुआ (आयतें 23-35)

अधिकारी जल्दी ही अपनी योजना को व्यवहार में लाया:

> और दो सूबेदारों को बुलाकर कहा; दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत, पहर रात बीते [अर्थात लगभग 9 बजे रात्रि] कैसरिया को जाने के लिए तैयार कर रखो।[33] और पौलुस की सवारी के लिए[34] घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुंचा दें[35] (आयतें 23, 24)।

पलटन के सरदार ने एक कैदी की सुरक्षा के लिए अपनी पलटन में से आधे अर्थात 470 लोग भेजे![36] हम देख चुके हैं कि ''पौलुस को मारने के लिए यहूदियों ने किस हद तक जाना था''; अब ''हम देखते हैं कि निष्पक्ष न्याय के लिए रोमी सरकार ने किस हद तक जाना था''![37] पौलुस को कैसरिया में ले जाया जाना था, जो रोमी सेनाओं का मुख्यालय और रोमी राज्यपाल का घर था।[38]

कुछ प्रश्न पूछने के लिए मुझे यहां रुकना होगा: क्या यह संयोग ही था कि यरूशलेम के सब लोग, जिन्होंने इस षड्यन्त्र के बारे में सुना था, पौलुस को चेतावनी देने के लिए चिन्तित थे? क्या यह अचानक ही हो गया था या पौलुस के साथ अलग व्यवहार किया गया ताकि वह अतिथियों से मिल सके और पलटन के सरदार तक अपनी बात पहुंचा सके? क्या यह केवल संयोग ही था कि किले का उच्च अधिकारी ऐसा आदमी था जिसने एक जवान की बात सुनने के लिए सहमत होना था और एक ऐसे विवेक वाला व्यक्ति था जो किसी भी कीमत पर पौलुस की सुरक्षा करना चाहता था? क्या पौलुस को कैसरिया में भेजना मात्र संयोग ही था जहां उसे कैसर के सामने अपील करने का अवसर मिला था (25:11) और इस प्रकार अन्त में रोम पहुंच गया था? इन सभी प्रश्नों का उत्तर है, नहीं बल्कि यह सब परमेश्वर के अद्‌भुत पूर्वप्रबन्ध का परिणाम था!

इस कैदी को भेजने के प्रबन्ध किए जा रहे थे, तो पलटन के सरदार ने राज्यपाल के नाम एक पत्र लिखा। यह पत्र लिखना आसान नहीं था, क्योंकि उसे स्पष्ट जानकारी नहीं थी कि पौलुस को किस गलती के लिए पकड़ा गया था।

> उसने इस प्रकार की[39] चिट्ठी[40] भी लिखी;
>
> महाप्रतापी[41] फेलिक्स हाकिम को क्लौदियुस लूसियास[42] का नमस्कार। इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैंने जाना, कि यह रोमी है, तो पलटन लेकर छुड़ा लाया। और मैं जानना चाहता था, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिए उसे उन की महासभा में ले गया। तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं,[43] परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने के योग्य उस में कोई दोष नहीं। और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया; और मुद्दइयों को भी आज्ञा दी, कि तेरे साम्हने उस पर नालिश करें (आयतें 25-30)।

यह पत्र इस बात का उदाहरण है कि इस प्रकार की कहानी बताने के लिए जो बात सबसे अधिक प्रकाश में लानी हो, उसे किस प्रकार चतुराई से अपनी इच्छा के अनुकूल बनाया जा सकता है।[44] यह सत्य था कि सेनापति ने पौलुस को रोमी नागरिक होने के कारण नहीं बचाया था। बल्कि, उसने उसे एक दंगा समाप्त करने के लिए गिरफ्तार किया था। पौलुस को मारना आरम्भ करने से पहले उसे यह पता नहीं चला था कि पौलुस एक रोमी नागरिक है, यह एक ऐसा तथ्य था जो सुविधा अनुसार व्याख्या के लिए छोड़ दिया गया। फिर, अधिकारी ने पत्र भेजते हुए, सम्भवत: पौलुस पर आरोप लगाने वालों को कैसरिया में जाकर उसके विरुद्ध नालिश करने के लिए *नहीं* कहा था। यह यकीनन ही उसने अगले दिन तब करना था जब उसे पता लग जाता कि पौलुस उनकी पहुंच से बाहर सुरक्षित है।[45]

परन्तु, लूका ने इस पत्र को जो नये नियम में मिलने वाला एक मात्र सांसारिक पत्र है, किसी रोमी अधिकारी को परेशान करने के लिए नहीं, बल्कि इन बातों को चिरस्मरणीय रखने के लिए शामिल किया गया: ''मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने के योग्य उस में कोई दोष नहीं।''[46] हम इस बात से उलझन में पड़ जाते हैं कि पौलुस ने आखिर क्या किया था उसने देखा कि उनका झगड़ा धर्मशास्त्र से सम्बन्धित था न कि राजनैतिक। रोमी कानून के परिदृश्य में, वह मानता था कि पौलुस ने मृत्यु या कारावास के दण्ड योग्य कोई काम नहीं किया था।[47] अन्य शब्दों में, पौलुस अपराधी नहीं था और उसे छोड़ दिया जाना चाहिए था!

सारी तैयारी होने के पश्चात सेना की एक छोटी टुकड़ी यरूशलेम की उत्तर पश्चिम पहाड़ी की तरफ, प्रकाशहीन मार्ग से होते हुए आगे बढ़ी।[48] पौलुस के 470 रक्षक थे। नहीं, 471 रक्षक कहें क्योंकि प्रभु भी उसके साथ था। ये लोग जितनी जल्दी हो सका उस

संदेहपूर्ण क्षेत्र से निकल लिए। ''सो जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात[49] अन्तिपत्रिस में लाए''[50] (आयत 31)। अन्तिपत्रिस कैसरिया के मार्ग में यरूशलेम से लगभग 35 मील यहूदिया और सामरिया की सीमा पर स्थित एक सैनिक अड्डा था।[51]

पलटन के सरदार की आशा के अनुसार, वे रात को निकलकर पौलुस के शत्रुओं से बच गए। अन्तिपत्रिस पहुंचने पर, ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी भूखण्ड जहां उन पर घात लग सकती थी, उनके पीछे था! उनके आगे की भूमि खुली तथा समतल थी। इसलिए, अगले दिन (सम्भवत: थोड़ा आराम करके) 400 सिपाही और भालैत शान्ति बनाए रखने की अपनी ड्यूटी देने पौलुस को कैसरिया में ले जाने के लिए सत्तर घुड़सवारों को छोड़कर यरूशलेम में लौट गए (आयत 32)।

दल के सभी लोग घोड़ों पर थे, इसलिए कैसरिया की अन्तिम पच्चीस मील की यात्रा बड़ी जल्दी खत्म हो गई। घोड़े पर बैठा पौलुस उन बातों को याद कर रहा था जो दो से भी कम सप्ताह पहले उसके और उसके साथियों ने उस मार्ग पर की थीं। वह अवश्य ही यह सब देखकर चकित हुआ होगा कि कुछ ही दिनों में क्या-क्या हो गया और कैसे परिस्थिति एकदम बदल गई थी।

अन्त में, यह दल कैसरिया में पहुंचा। सत्तर से अधिक घुड़सवारों को देखकर नगर में भीड़ जमा हो गई होगी। यदि किसी मसीही ने पौलुस को सत्तर सिपाहियों में घिरा देखा हो, तो वे अवश्य ही हैरान हुए होंगे कि अगबुस की भविष्यवाणी कितनी जल्दी पूरी हो गई थी (21:10, 11)।

पौलुस के सशस्त्र रक्षक ने राज्यपाल के महल में पहुंचकर, ''हाकिम को चिट्ठी दी और पौलुस को भी उसके साम्हने खड़ा किया'' (23:33)। ''हम कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस पर धूल चढ़ी हुई है और वह सफर से थका हुआ है, हाथ-पैर बन्धे हुए हैं, फिर भी फेलिक्स के सामने [खड़ा] वह शांत आत्मविश्वास से भरा हुआ है।''[52] पहली, परन्तु अन्तिम बार नहीं यह छोटा सा यहूदी फलस्तीन की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक हस्ती के सामने खड़ा था।

सेनापति का पत्र पढ़कर राज्यपाल ने अवश्य ही इस थके हुए यात्री को ऊपर से नीचे तक देखकर आश्चर्य किया होगा कि किसी को हानि न पहुंचाने योग्य दिखने वाला यह यहूदी कैसे किसी गड़बड़ का कारण हो सकता था। अन्त में, उसने पौलुस से पूछा कि वह कहां का रहने वाला है (आयत 34क)।[53] ''और जब जान लिया कि किलिकिया का है'' (आयत 35क) जो कि रोमी राज्य था, तो उसने फैसला किया कि वह इस मामले को निपटा सकता है। उसने रूखा सा वायदा देकर पौलुस को विदा किया: ''जब तेरे मुद्दई भी आएंगे, तो मैं तेरा मुकदमा करूंगा''[54] (आयत 35ख)।

पौलुस को साधारण कैद में नहीं, बल्कि, ''हेरोदेस के किले में''[55] (आयत 35ग) रखा गया था। यह हेरोदेस महान द्वारा बनाया गया महल था जो उसके नाम से प्रसिद्ध था। अब यह रोमी राज्यपाल का सरकारी मुख्यालय था। परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध के अनुसार,

दो वर्षों के लिए वह पौलुस का ''सुरक्षित घर'' होना था (24:27)।

उन चालीस भावी हत्यारों का क्या हुआ जिन्होंने शपथ खाई थी कि जब तक वह मरता नहीं वे कुछ खाएंगे या पीएंगे नहीं? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जब उन्हें पता चला कि उनका षड्यन्त्र विफल हो गया है और पौलुस फिर उनकी पहुंच से दूर चला गया है तो वे कितने परेशान हुए होंगे? यदि वे अपनी शपथ के प्रति ईमानदार थे, तो उन्हें बहुत भूख लगी होगी! यहूदी लोग उस शपथ से मुकर जाने में निपुण थे, जिससे उन्हें पछताना पड़ता था, इसलिए मुझे संदेह है कि इन लोगों ने बहुत दिनों तक खाना त्यागा हो। मैं उम्मीद करूंगा कि कम से कम उन्हें यह सबक तो मिल ही गया होगा कि ''यहोवा के विरुद्ध ... कोई युक्ति नहीं चलती है'' (नीतिवचन 21:30), परन्तु मुझे अभी भी संदेह है।

सारांश

हमारी कहानी का मुख्य सार यह है कि *नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है।* पौलुस को अपनी उम्मीद जीवत रखने के लिए इसका पता होना चाहिए था और हमें भी! ऑगस्टिन ने कहा, ''भूत को परमेश्वर के अनुग्रह के भरोसे, वर्तमान को उसके प्रेम, और भविष्य को उसके पूर्वप्रबन्ध के भरोसे छोड़ दो।''[56] हो सकता है कि हर रोज़, हम यह बता पाने के योग्य न हों कि परमेश्वर हमारे जीवनों में कार्य करता है, परन्तु हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि वह है। एड वार्टन ने टिप्पणी की, ''हमारे जीवन में परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध ऐसी किताब है जो कुछ भाषाओं की तरह केवल उल्टी ही पढ़ी जा सकती है और उसे पढ़ भी केवल विश्वासी ही सकते हैं।''[57] चाहे कुछ भी क्यों न होता रहे, उसमें भरोसा रखें। भजन लिखने वाले के साथ कहना सीखें, ''हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूं, ...मेरा आधार तू ही है'' (भजन संहिता 71:5)।

पाठ समाप्त करते हुए, मैं उन पर इसकी विशेष प्रासंगिकता बनाना चाहता हूं जो अभी मसीही नहीं हैं। इस पाठ के सम्बन्ध में कुछ भी चमत्कारी नहीं है, परन्तु ध्यान दें कि यह पाठ आपको परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध के अनुसार मिला हो सकता है। क्या यह मात्र संयोग ही है कि आप इन बातों पर विचार कर रहे हैं? यकीनन ही नहीं। परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी संतान बन जाएं! आप उसकी संतान अभी क्यों नहीं बन जाते?

पाद टिप्पणियां

[1]इसे विशेष प्रकार के लोगों में उनकी आशा का जाना कहा जा सकता है। [2]प्रेरितों के काम के अन्तिम अध्यायों में ''आशा'' एक मुख्य शब्द है (23:6; 24:15; 26:6, 7; 28:20)। [3]जी. कैम्पबेल, *द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़।* [4]लूका ने संक्षिप्त विवरण दिया, इसलिए सामान्य की तरह हमें यरूशलेम की कलीसिया पर अभियोग चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए, परन्तु जहां तक लिखे हुए की बात है, उसे यरूशलेम में कष्टों के दौरान स्थानीय कलीसिया से न तो कोई सहायता व न ही समर्थन मिला। काश हमें पढ़ने को मिलता कि पतरस की तरह ''परमेश्वर की कलीसिया उसके लिए लगातार प्रार्थना कर रही थी'' (12:5), परन्तु हमें यह पढ़ने को नहीं मिलता। [5]हम पौलुस की योजनाओं तथा यीशु के वचनों के साथ तुलना करके पौलुस के विचार को दोबारा से बना सकते हैं। स्पष्ट तौर पर यीशु की बातें पौलुस की आवश्यकता के अनुसार उसे सांत्वना देने

के लिए थीं। [6]यह संकेत देने के लिए कि प्रभु ने उसे छोड़ा नहीं था ''पास खड़े होकर'' वाक्यांश का अर्थ अक्षरश: भी लिया जा सकता है और सांकेतिक भी। 2 तीमुथियुस 4:16, 17 में पौलुस ने कहा, ''मेरे पहले प्रत्युत्तर करने के समय में किसी ने मेरा साथ नहीं दिया, बरन सब ने मुझे छोड़ दिया था ... परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी, ...'' [7]कहने को, पौलुस अपना ही प्रत्युत्तर दे रहा था; परन्तु व्यावहारिक रूप से, वह प्रभु के कार्य की गवाही दे रहा था। [8]सुझाव दिया गया है कि ''वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी'' शब्द ''प्रेरितों के काम पुस्तक के तीसरे भाग का शीर्षक'' हो सकता था। ''सोलहवें अध्याय से, केन्द्रीय भाव रोम की ओर पश्चिम में पौलुस का बढ़ना है'' (हलफोर्ड ई. लॅकाक, *द ऐक्ट्स ऑफ अपोस्टल्ज़ इन प्रेज़ेंट-डे प्रीचिंग*)। [9]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री, अंक 1। [10]रिक एचले ने सुझाव दिया है कि वास्तव में, प्रभु ने कहा, ''मैंने तो टिकटें पहले ही खरीद ली हैं!''

[11]इस घटना की तुलना 1 शमूएल 14:24 और 2 शमूएल 3:35 से कीजिए। एक मूर्ति पूजक तुलना के लिए, देखिये 1 राजा 19:2. [12]पिछले पाठ में, महायाजक हनन्याह पर नोट्स देखिये। [13]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पाठ ''जब शैतान मुश्किल में डाल दे'' में पृष्ठ 128 पर ''महायाजकों'' पर नोट्स देखिये। [14]यह मानना जरूरी नहीं है कि जिन फरीसियों ने पिछले दिन पौलुस को बचाया था उन्होंने ही यह षड्यन्त्र रचा हो (ध्यान दें कि ग्रंथियों का कोई उल्लेख नहीं है; अधिकतर ग्रंथी फरीसी ही होते थे)। महासभा पर सदूकियों का नियन्त्रण था। योजना यह होगी कि पौलुस की हत्या के षड्यन्त्र का उल्लेख किए बिना सभा बुलाई जाए और पलटन के सरदार से पौलुस को उनके सामने लाने को कहा जाए। [15]ध्यान दें कि यह षड्यन्त्र रचने वाले और सभा के वे लोग जो इस षड्यन्त्र से सहमत थे, इस प्रकार मानने लगे कि पौलुस निर्दोष था। अन्य शब्दों में, वे जानते थे कि निष्पक्ष मुकदमे में पौलुस कभी भी दोषी नहीं ठहरेगा। [16]स्पष्टत:, इससे पिछले दिन कमांडर सभा के आंगनों में सिपाहियों को इतनी बड़ी संख्या में नहीं लाया था, क्योंकि उसे पौलुस के बचाव के लिए अतिरिक्त सेना को बुलाना पड़ा था (23:27)। [17]वेस्टर्न टैक्सट में आयत 15 के अन्त में जोड़ा गया है, ''इसके लिए यदि हमें मरना भी पड़े।'' प्राय: यह बात उठती रही है कि यदि कोई अपना जीवन हत्या के लिए देने का इच्छुक हो तो उसकी हत्या करना सम्भव है। ये धर्मान्ध लोग पौलुस से इतनी घृणा करते थे कि उसकी हत्या के लिए वे अपने जीवन त्यागने के लिए भी तैयार थे। [18]जी. सी. ब्रिवर पिछली एक पीढ़ी का प्रसिद्ध सुसमाचार प्रचारक था। [19]रिक एचले, ''एविडेन्स ऑफ़ प्रोविडेन्स'' में 15 मार्च 1987 को सदर्न हिल्ज़ चर्च ऑफ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सास में दिए प्रवचन में उद्धृत। [20]NASB और KJV दोनों के लिए यह बात सत्य है। परन्तु, ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन पदों में इस शब्द का *क्रिया* रूप मिलता है जो ज़ोर देता है कि ''परमेश्वर उपलब्ध कराता है'' (उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 22:8)।

[21]एफ. एफ. ब्रूस ने इसे ''प्रेरितों के काम में उन सबके लिए जो पौलुस के निजी जीवन तथा पारिवारिक सम्बन्धों में दिलचस्पी लेते हैं, सबसे निराश करने वाली घटनाओं में से एक'' कहा *(द बुक ऑफ़ ऐक्ट्स,* rev. ed.)। [22]बाइबल में पौलुस के परिवार का यह केवल एक प्रत्यक्ष हवाला है। रोमियों 16:7, 21 में ''कुटुम्बी'' शब्द सम्भवत: साथी यहूदियों के लिए है (ध्यान दें रोमियों 9:3)। [23]हो सकता है कि अपने मामा की तरह उसे भी पहले एक छात्र के रूप में यरूशलेम भेजा गया हो। यह भी हो सकता है कि उसका परिवार पिन्तेकुस्त के पर्व के लिए यरूशलेम आया हो और अभी तक वापस न गया हो। कई लोगों का विचार है कि उसकी बहन का यरूशलेम में एक घर था, परन्तु यदि ऐसा था और यदि वे मित्र थे, तो यह समझना कठिन है कि पौलुस मनासोन के साथ क्यों रहा (21:16)। [24]पौलुस के मसीही बनने पर, उसके परिवार ने लगभग उसे त्याग दिया था (ध्यान दें फिलिप्पियों 3:7, 8), परन्तु किसी कारण जब इस भांजे को पता चला तो उसे उसकी चिन्ता होने लगी। जब अपने मनपरिवर्तन के बाद पौलुस तरसुस में लौटा (प्रेरितों 9:30), तो क्या वह अपने परिवार में से किसी को जिसमें उसकी बहन भी शामिल थी परिवर्तित कर पाया था? यदि उसका भांजा यरूशलेम में अध्ययन के लिए आया था, तो क्या वह कलीसिया के सदस्यों के सम्पर्क में आकर मसीही बन गया था, या मसीही उद्देश्य के लिए उसके मन में सहानुभूति थी? यदि वह मसीही नहीं बना था, तो यह जवान पौलुस को अपने ''परिवार'' का भाग जानकर उसकी हत्या की बात से

परेशान हो गया था। [25]शायद उसने केवल यह बात उड़ते-उड़ते ही सुनी थी; किसी बात को जब चालीस से अधिक लोग जानते हों तो उसे गुप्त रखना कठिन होता है। परन्तु, उसने (1) उसे लगभग एक ही बार सुना था और (2) एक-एक शब्द करके उसे दोहरा सकता था (आयत 20 और 21 की तुलना 12-15 आयतों से कीजिए), इसलिए इस बात की अधिक सम्भावना है कि उसने उसकी हत्या की योजना किसी से सुनी थी। कई लोगों का मानना है कि पौलुस की बहन का विवाह किसी बड़े याजकाई परिवार में हुआ था और इस प्रकार की जानकारी उसके घर में पहले मिल जाती थी। (यह सुझाव दिया गया है कि षड्यन्त्र की बात कलीसिया के पास पहुंची और उन्होंने यह बात पौलुस तक पहुंचाने के लिए इस जवान बच्चे को भेजा। शायद यह विभिन्न सम्भावनाओं में सबसे कम सम्भावित है।) [26]कैदी व्यक्ति के लिए भोजन तथा आवश्यकताओं के लिए मित्रों पर निर्भर होना आम बात थी (देखिए मत्ती 25:36, 40; 10:34; 13:3)। [27]रोमी सिपाही किसी जवान या वयस्क पुरुष को हाथ से पकड़कर ले जाना पसन्द नहीं करता था। [28]यद्यपि यह सत्य है, परन्तु निश्चय ही वह इतना बड़ा था कि षड्यन्त्र के बारे में विस्तार से साफ-साफ समझा सकता था। [29]''तैयारी कर रखी है, केवल तेरे वचन की आस देख रहे हैं'' का अर्थ यह नहीं निकालना चाहिए कि उन्होंने बिनती कर रखी थी और अब उस कमांडर के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। इन शब्दों का इतना ही अर्थ है कि उन्होंने तैयारी कर रखी थी और अपनी योजना को कार्यान्वित करने का अवसर ढूंढ़ रहे थे। सम्भवत: बिनती अगली सुबह जल्दी ही आ जानी थी। [30]उसे यह पता लगाने का भी काफी अनुभव था कि लोग झूठ बोल रहे हैं या सच।

[31]मेरा मानना है कि ऐसा ही था क्योंकि जैसे ही उसने पौलुस के भांजे को भेजा, उसने अपनी कार्यवाही करने का निर्णय ले लिया था। [32]एक प्राचीन लेख में आयत 24 के अन्त में जोड़ा गया है: ''क्योंकि वह डरता था कि कहीं यहूदी उसे पकड़कर कत्ल न कर दें, और बाद में उस पर धन [अर्थात घूस] लेने का आरोप लग जाए।'' [33]यूनानी शब्द का अनुवाद ''भालैत'' एक अस्पष्ट शब्द है जिसका अर्थ है ''दायें हाथ में पकड़ना (या से फेंकना)।'' स्पष्टत: यह उन सिपाहियों को कहा गया जो एक ऐसे हथियार से लैस होते थे जो दाएं हाथ में पकड़ा जा सकता था या उसे फेंका जा सकता था। कई अनुवादों में केवल ''हल्के अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित'' ही है। [34]यह भी सम्भव है कि पौलुस को घोड़ा उपलब्ध करवाया गया, क्योंकि शारीरिक यातना के बाद वह चलने की स्थिति में नहीं था। यह भी सम्भव है कि यह ऐसे व्यक्ति के लिए एक रियायत थी जिसे कमांडर ने निर्दोष माना हो। कुछ भी हो, इससे यात्रा का पहला भाग तेजी से पूरा किया जा सकता था, और निश्चय ही यात्रा का दूसरा भाग भी यदि पौलुस को घोड़ा उपलब्ध हो जाए। अंग्रेज़ी के अनुवाद में ''mounts'' बहुवचन में है। क्या अतिरिक्त घोड़े यह सुनिश्चित करने के लिए थे कि पौलुस को सवारी ताज़ी ही मिले। क्या घोड़ों में से एक उस सिपाही के लिए था जिसने पौलुस को बांधना था? क्या पौलुस का सामान ले जाने के लिए अतिरिक्त घोड़ों की आवश्यकता थी? क्या यह सम्भव है कि पौलुस के कुछ मित्र और ''साथी कैदी'' भी उसी समय ले जाए गए थे (जैसे लूका और अरिस्तरखुस; देखिए प्रेरितों 27:2; कुलुस्सियों 4:10)। एक बार फिर, हमें कहना पड़ेगा कि हम नहीं जानते। [35]इस पाठ में फेलिक्स पर नोट्स देखिए। [36]यूनानी शब्द जो इस कमांडर के लिए प्रयुक्त होता है संकेत देता है कि उसके अधीन एक हज़ार लोग थे। [37]विलियम बार्कले, *द ऐक्टस ऑफ द अपोस्टल्ज़,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज rev.ed. कई संदेहवादी लोग इस बात पर लूका की यथार्थता पर संदेह करते हैं; वे इस विचार की कि एक कैदी की सुरक्षा के लिए इतने आदमी भेजे जाएं, हंसी उड़ाते हैं। परन्तु, फलस्तीन में समय गड़बड़ भरा था। कमांडर न केवल सिपाहियों पर आक्रमण होने पर उन चालीस धर्मांधों को मात देने के लिए इतने लोग भेजना चाहता था; बल्कि वह चाहता था कि इतने लोग भेजे जाएं कि उन पर आक्रमण करने का कोई *साहस* न करे। [38]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 125 और 156 पर कैसरिया पर नोट्स देखिए। प्रेरितों के काम में अपने अध्ययन में हमारा सामना कैसरिया से कई बार हुआ है (8:40; 9:30; 10:1, 24; 11:11; 12:19; 18:22; 21:8, 16)। [39]अनुवादित शब्द ''प्रकार'' का यूनानी शब्द *tupos* है जिसका प्रयोग ''नमूना'' के लिए किया जाता है। पत्र में उन दिनों पत्र लिखने का, विशेष रूप से सरकारी पत्राचार का मानक ढंग इस्तेमाल किया गया। लूका ने इस शब्द का प्रयोग हमें यह बताने के लिए किया हो सकता है कि उसने चिट्ठी की तरह

का एक संक्षिप्त रूप दिया है। आलोचक यह ज़ोर देते हुए कि उसे किसी भी प्रकार से पत्र में लिखी बातों का पता नहीं चल सकता था, लूका पर पत्र को ''संवारने'' का आरोप लगाते हैं। परन्तु यह सम्भव है कि यह पत्र पौलुस के कैसरिया में पहुंचने पर उसकी सुनवाई के बाद पढ़ा गया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लूका को पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त थी और मुझे विश्वास है कि परमेश्वर को उस पत्र में लिखी बातों का पता था। [40]मूलत:, यह ''एक पत्री'' है।

[41]इस उपाधि की तुलना लूका 1:3 में दी उपाधि से कीजिए। [42]''लुसियास'' से संकेत मिलता है कि उसका जन्म एक यूनानी के रूप में हुआ था। [43]वैस्टर्न टैक्सट में जोड़ा गया है ''मूसा और किसी यीशु के विषय में।'' [44]किसी-किसी अनुवाद में, कमांडर ने अपने इस छोटे से पत्र में पांच से सात बार व्यक्तिगत सर्वनाम ''मैं'' का प्रयोग किया। [45]उसकी योजना सम्भवत: सभा द्वारा उसके पास आकर पौलुस को उनके सामने पेश करने की बिनती तक प्रतीक्षा करने की थी। फिर उसने अपना खेद प्रकट करना था कि वह तो पौलुस को कैसरिया में भेज भी चुका है और सुझाव देना था यदि वे मामले को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो कैसरिया में उसके पीछे जाएं। स्पष्टत: इस सुझाव के कारण 24:1 में महायाजक को कैसरिया जाने का बहाना मिल गया। वैस्टर्न टैक्सट के अनुसार, कमांडर ने पौलुस के आरोपियों को कैसरिया जाने के लिए कहा (KJV में देखिए 24:8)। [46]कमांडर की बातों से यह निष्कर्ष (पिछले पाठ में पाद टिप्पणी 11 देखिए) निकालने में समर्थन मिला कि मन्दिर को अशुद्ध करने का आरोप सभा के सामने पौलुस के ''मुकदमे'' के समय नहीं लगाया गया था क्योंकि मन्दिर को अपवित्र करने का दण्ड मृत्यु *था।* [47]यहां पर यीशु की मुकदमों से एक और समानता मिलती है (यूहन्ना 18:38)। याद रखें कि लूका एक रोमी अधिकारी के लिए लिख रहा था (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 1:1 पर नोट्स देखिए)। उसने सम्भवत: यह स्पष्ट करना चाहा होगा कि मसीही लोगों के बारे में रोम की अविरोधी स्थिति यह थी कि वे किसी रोमी कानून का उल्लंघन नहीं कर रहे थे। [48]नगर के भीतर तथा बाहर रोमी सेना की हलचल लगभग सामान्य बात थी और उससे कोई संदेह उत्पन्न नहीं होता था। [49]एक बार फिर, पौलुस को अन्धेरे में नगर से बाहर चोरी से ले जाया गया (देखिए 9:25; 17:10)। [50]पुराने नियम में अन्तिपत्रिस का नाम अपेक था (1 शमूएल 4:1)। इस नगर को हेरोदेस महान ने फिर से बसाकर अपने पिता अन्तिपत्र के नाम पर रखा था।

[51]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए। [52]चार्लस आर. स्विंडॉल, *द स्ट्रैन्थ ऑफ़ एन इग्ज़ोक्टिंग पैशन।* [53]यह तय करना कि लोगों पर मुकदमा कहां चलाया जाना चाहिए स्पष्टत: एक जटिल मामला था जिसमें राज्य का प्रकार, वहां के अधिकारी आदि पर विचार किया जाता था। सम्भवत:, केस का निर्णय लेने के लिए फेलिक्स इन बातों को ध्यान में रखता था: (1) किलकिया एक रोमी राज्य था; (2) पौलुस एक रोमी नागरिक था; (3) अपराध फेलिक्स के राज्य में हुआ था; (4) यदि पौलुस पर आरोप लगाने के लिए राज्यपाल यहूदियों को किलकिया में भेज देता तो वे नाराज हो जाते, जिसकी उसे परवाह नहीं थी (देखिए 24:27)। [54]यह कमांडर के पत्र के उस वाक्य के जवाब में था कि वह पौलुस के आरोपियों को फेलिक्स के सामने पौलुस के विरुद्ध आरोप लगाने के लिए कह रहा था (आयत 30)। यह अगले अध्याय के आरम्भ में होता है। [55]''किला'' कई स्थानों पर ''सरकारी'' निवासों के लिए प्रयुक्त होने वाले यूनानी शब्द का लिप्यान्तरण है (मत्ती 27:27; मरकुस 15:16; यूहन्ना 18:28, 33; 19:19; फिलिप्पियों 1:13)। [56]विर्यसबे, 496 में उद्धृत। [57]एड वार्टन, *द एक्शन ऑफ द बुक ऑफ ऐक्ट्स।*